1988 16 SEPTEMBER FRIDAY

## पुरुष के अस्तित्व के प्रमाण :—

प्रकृति की तरह पुरुष की सत्ता को प्रमाणित करने के लिए सांख्य ने विभिन्न युक्तियों का प्रयोग किया है। सांख्यकारिका में बताया गया है :—

संघात परार्थत्वात् त्रिगुणादि विपर्ययादधिष्ठानात्।
पुरुषोऽस्ति भोक्तृभावात् कैवल्यार्थं प्रवृत्तेश्च॥

① संघातपरार्थत्वात् :— विश्व की समस्त वस्तुएँ संघातमय या अवयव युक्त हैं। संघातमय वस्तुएँ दूसरों के उद्देश्य के लिए निर्मित होती हैं। जैसे मन, बुद्धि, इन्द्रिया इत्यादि। जिस प्रकार कुर्सी का निर्माण बैठने वालों के लिए होता है उसी प्रकार विश्व की इन वस्तुओं का निर्माण दूसरों के प्रयोजन के लिए हुआ है। यदि माना जाय कि वस्तुओं का निर्माण प्रकृति के प्रयोजन के लिए हुआ है तो यह मानना गलत होगा। क्योंकि प्रकृति अचेतन होने के कारण इनका उपयोग नहीं कर

सकती है। अतः पुरुष की सत्ता प्रमाणित है। जिसके उद्देश्य की पूर्ति के लिए संसार की प्रत्येक वस्तु साधन मात्र है। पुरुष की उद्देश्य की पूर्ति के लिए प्रकृति भिन्न-भिन्न वस्तुओं का विकास करती है। इस कारण विकासवाद प्रयोजनमय है। इस तर्क को प्रयोजनात्मक (Teleogical) कहते हैं।
(Teleological)

(2) त्रिगुणादि विपर्ययात्:— विश्व की वस्तुएँ त्रिगुणात्मक हैं। क्योंकि उनमें सुख-दुःख और उदासीनता उत्पन्न करने की शक्ति है इसलिए कोई ऐसे तत्व का रहना आवश्यक है जो अत्रिगुण हो। वह अत्रिगुण तत्व जिसकी ओर त्रिगुणात्मक विश्व संकेत करता है — पुरुष है। पुरुष विभिन्न गुणों का साक्षी है। पर वह स्वयं उनसे परे है। यह प्रमाण तार्किक (Logical) है।

(3) अधिष्ठानात् :—
विश्व के समस्त पदार्थ अचेतन हैं। अचेतन वस्तु अपनी

Scanned with CamScanner

सकती है अब उसके संचालन के लिए चेतन सत्ता के रूप में कारीगर को माना जाए। इसी प्रकार प्रकृति तथा उसके विकारों का भी कोई न कोई पथ-प्रदर्शक आवश्यक होगा। अब प्रश्न है कि वह चेतन तत्त्व कौन है जो अचेतन प्रकृति और उसके विकारों का पथ-प्रदर्शन करता है। इस प्रकार सांख्य, अचेतन प्रकृति और उसके विकारों का चेतन अधिष्ठाता (पथ-प्रदर्शक) के रूप में पुरुष की सत्ता को प्रमाणित करता है। यह प्रमाण तात्त्विक (Ontological) कहा जाता है।

(4) भोक्तृभावात् :— संसार की सभी वस्तुएँ भोग्य हैं। अतः इन वस्तुओं का भोक्ता होना परम आवश्यक है। अब प्रश्न है कि इन वस्तुओं का भोक्ता कौन है। इन वस्तुओं का भोक्ता प्रकृति नहीं हो सकती है क्योंकि वह अचेतन है। इसके अतिरिक्त, प्रकृति ~~भोक्ता~~ ~~है~~ भोग्य है। एक ही वस्तु भोग्य और भोक्ता दोनों नहीं हो सकती।

यदि ऐसा माना जाय तो आत्म-विरोध होगा। इससे यह संकेत मिलता है कि संसार की विभिन्न वस्तुओं का भोक्ता चेतन सत्ता ही है। संसार का प्रत्येक पदार्थ सुख-दुःख और उदासीनता उत्पन्न करता है। परन्तु इनका अर्थ तब ही निकलता है जबकि इनका अनुभव करने वाली कोई चेतन सत्ता हो। सच पूछा जाय तो वह चेतन सत्ता पुरुष है जो सुख-दुःख और उदासीनता का अनुभव करता है। अतः पुरुष को अस्तित्व मानना आवश्यक है। यह प्रमाण नैतिक (ethical) कहा जाता है।

(5) **कैवल्यार्थ प्रवृत्ति :-** विश्व में कुछ ऐसे व्यक्ति हैं जो मोक्ष के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। मोक्ष दुःखों का विनाश है। मोक्ष की क्षमता भौतिक विषयों के लिए संभव नहीं है क्योंकि वे दुःखात्मक और अचेतन हैं। मोक्ष की कामना अशरीरी व्यक्ति के द्वारा ही संभव मानी जा सकती है।

Scanned with CamScanner

यह चेतन अशरीरी सत्ता पुरुष है। यदि पुरुष का अस्तित्व नहीं माना जाय तो मोक्ष पाने की अभिलाषा या जीवन मुक्ति शब्द निरर्थक हो जायेंगे। इससे प्रमाणित होता है कि पुरुष का अस्तित्व अनिवार्य है। यह प्रमाण धार्मिक (Religious) कहा जाता है।

## पुरुष (आत्मा) की अनेकता :—

पुरुष (आत्मा) का अस्तित्व प्रमाणित हो जाने के बाद पुरुष (आत्मा व जीव) की संख्या पर विचार करना आवश्यक है। सांख्य के अनुसार पुरुष की संख्या अनेक है। जितने जीव हैं उतने ही आत्माएँ हैं। सभी आत्मा का स्वरूप चैतन्य है। गुण की दृष्टि से सभी आत्माएँ समान हैं पर परिमाण की दृष्टि से सभी भिन्न-भिन्न हैं। इस प्रकार सांख्य पुरुष के संबंध में अनेकवाद का समर्थक हो जाता है। सांख्य का यह विचार जैन मीमांसा दर्शन के आत्मा संबंधी

विचार से मेल रखता है। मीमांसा और जैन भी आत्मा की अनेकता में विश्वास रखते हैं। परन्तु शंकर ने आत्मा को एक माना है।

सांख्य आत्मा की अनेकता को युक्तियों के द्वारा प्रमाणित करता है। इन्हें अनेकात्मवाद का प्रमाण (proofs for plurality of self) कहा जाता है।

(1) व्यक्ति के जन्म मरण में विभिन्नता है। जब एक व्यक्ति का जन्म होता है तो दूसरे व्यक्ति की मृत्यु होती है। यदि विश्व में एक ही आत्मा का निवास होता तो एक व्यक्ति के जन्म लेने से संसार का समस्त व्यक्तियों का जन्म होता। तथा एक व्यक्ति की मृत्यु से सभी व्यक्तियों की मृत्यु हो जाती पर ऐसा नहीं होता है। इससे प्रमाणित होता है कि आत्माएँ अनेक हैं।

1988 23 SEPTEMBER FRIDAY

(2) संसार के व्यक्तियों की ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों में भिन्नता है। कोई व्यक्ति अन्धा है, कोई बहरा है तो कोई लंगड़ा है। यदि विश्व में एक ही आत्मा का अस्तित्व होता तो एक व्यक्ति के अन्धा होने से संसार के समस्त व्यक्तियों को अन्धा होना पड़ता तथा एक व्यक्ति के बहरा होने से संसार के समस्त व्यक्तियों को बहरा होना पड़ता। परन्तु ऐसी बात नहीं पायी जाती जिससे आत्मा की अनेकता का प्रमाण मिल जाता है।

(3) जब हम विश्व की ओर दृष्टिपात करते हैं तो व्यक्तियों के कार्य कलापों में विभिन्नता पाते हैं। जब एक व्यक्ति सक्रिय रहता है तो दूसरा व्यक्ति निष्क्रिय रहता है। जब एक व्यक्ति हँसता है तब दूसरा व्यक्ति रोता है, जब एक व्यक्ति धार्मिक कार्य करता है तो दूसरा व्यक्ति अधार्मिक कार्य करता है। इससे प्रमाणित होता है कि आत्माएँ अनेक हैं।

SEPTEMBER 24/25 1988
SAT./SUN.

(4) यद्यपि प्रत्येक व्यक्ति में सात्विक रजस और तमस तीनों गुण विद्यमान है फिर भी किसी व्यक्ति में सत्वगुण की प्रधानता होती है तो किसी में रजोगुण की तो किसी में तमो गुण की प्रधानता होती है। सात्विक व्यक्ति में सुख, ज्ञान और संतोष निहित होता है राजसिक व्यक्ति में दुःख और आसक्ति का निवास होता है। तामसिक व्यक्ति में अज्ञान और उदासीनता वर्तमान रहती है यदि एक ही आत्मा होती तो सभी व्यक्ति सात्विक, राजसिक या तामसिक होते। पर ऐसा नहीं होता है। इससे आत्मा की अनेकता सिद्ध होती है।

(5) संसार की व्यक्तियों में विभिन्न कोटियाँ हैं। कोई व्यक्ति उच्च कोटि का है तो कोई निम्न कोटि का है। देवता मनुष्य से उच्च कोटि के माने जाते हैं। जबकि पशु-पक्षी निम्नकोटि के माने जाते हैं। यदि विश्व

मैं एक ही आत्मा का निवास होता तो सभी जीवों को एक ही कोटि में रखा जाता। इस प्रकार जीवों की भिन्न-भिन्न श्रेणियों को देख कर आत्मा को अनेक मानना अनिवार्य है।

आलोचना :—

(Objection against purusa) :—

① सांख्य पुरुष को शाश्वत मानता है। यह अविनाशी है परन्तु सांख्य ने पुरुष की व्याख्या इस प्रकार की है जो यह प्रमाणित करता है कि पुरुष विनाशी है। सांख्य ने पुरुष के जन्म और मृत्यु को माना है। जब पुरुष का जन्म और मृत्यु होती है तो उसे अविनाशी मानना ठीक नहीं है।

② सांख्य ने पुरुष को निष्क्रिय माना है। इसके विपरीत प्रकृति सक्रिय है। पुरुष भोक्ता और प्रकृति भोग्य का विषय है। यदि पुरुष निष्क्रिय है तो वह भोक्ता कैसे हो सकता है। ज्ञान मीमान्सा के क्षेत्र में सांख्य पुरुष को सक्रिय

प्रमाणित करता है।

(3) सांख्य दर्शन का सबसे बड़ा दोष यह कहा जा सकता है कि इसने आरम्भ से अन्त तक पुरुष और जीव के बीच भेद उपस्थित नहीं किया है। जो बातें पुरुष के बारे बताई गई है वे बातें जीव पर भी लागू होती है। पुरुष को स्थापित करने के लिए जितने प्रमाण दिये गये हैं। उनमें से अधिकांशतः जीव की सत्ता प्रमाणित करते हैं पुरुष जीव के बीच विभेदक रेखा मुश्किल नजर आती है।

(4) सांख्य पुरुष की अनेकता में विश्वास करता है यह अनेकात्मवाद विरोधपूर्ण है। यदि पुरुषों में गुणात्मक भेद नहीं है तो पुरुषों को अनेक मानना अप्रमाणिक है। पुरुष की अनेकता को प्रमाणित करने के लिए दिये गये प्रमाण जीव की अनेकता प्रमाणित करते हैं पुरुष की नहीं।

"समाप्त"